

① शब्द शक्ति का अर्थ एवं भेद ।
 अर्थ- काव्य में रस का संचार शब्द-
 शक्तियों से होता है, यहाँ शब्दों का
 विशेष महत्व है। कवियों की कृ-
 तियों में शब्दों के अनेक अर्थ
 देने की प्रथा उचित नहीं है। देखना
 यह चाहिए कि कवि ने शब्दों का
 प्रयोग कर जिन अमीष्ट अर्थों को
 रखना चाहा है, उसमें कहीं तक सफल
 हुआ है। तात्पर्य यह कि "शब्द की
 शक्ति उसके अन्तर्निहित अर्थ को
 व्यक्त करने का व्यापार है, ग अर्थ
 का बोध कराने में शब्द कारण है
 और अर्थ का बोध कराने वाले
 व्यापार को शब्दशक्ति कहते हैं।

शब्दशक्ति निम्नांकित तीन प्रकार
 के होते हैं -

(1) अभिधा - आचार्य मम्मट के
 अनुसार साक्षात् संकेतित अर्थ का
 बोध कराने वाले व्यापार को अभिधा
 व्यापार या शक्ति कहते हैं।
 तात्पर्य यह कि अभिधा शब्द की
 वह शक्ति है जो शब्द के साधा-
 रण और व्यावहारिक अर्थ को प्रकट
 करती है, जैसे गद्या से तात्पर्य

एक पशु विशेष ।

(ii) लक्षणा व्यंजना - मम्मट के अनुसार मुख्य अर्थ के वाचित होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण जिस शक्ति से मुख्य अर्थ से संबंध रखने वाला अन्य अर्थ लक्षित हो उसे लक्षणा शक्ति कहते हैं। जैसे यह आदमी चोकेन्ना है। यहाँ पर चोकेन्ना का मुख्य अर्थ चार कान है, पर आदमी के दो कान होते हैं। यहाँ मुख्य अर्थ वाचित है और लक्षित अर्थ 'सावधान' है।

(iii) व्यंजना - शब्द के जिस व्यापार से मुख्य और लक्ष्य अर्थ से भिन्न अर्थ की उत्पत्ति हो, उसे 'व्यंजना' कहते हैं। उदाहरण के लिए -
"रहिमन पानी राखिये"

बिन पानी सब सूज
पानी गये न उबरे

मोती, मानुस, चूना, पानी शब्द का मुख्य अर्थ जल है। इस पद में पानी का अर्थ मोती के लिए चमक, मानव के लिए प्रतिष्ठा और चूना के लिए जल है। इन अर्थों की उत्पत्ति व्यंजना द्वारा हुई है।